मीडिया वालो अब तो उस बच्ची को छोड़ दो, क्यों रोजाना रेप करते हो उसका!

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

कठुआ गैंगरेप की जिस रिपोर्ट पर दैनिक जागरण ने खबर बनाई, उसमें हायमन फटने का जिक्र है। लोग कह रहे हैं, हायमन बस सेक्स से ही नहीं फटता है। वो तो खेलने-कूदने, भारी सामान उठाने से भी फट सकता है। सच्ची? ये ज्ञान अभी एकाएक से आ गया? तब क्यों नहीं याद आता, जब सुहाग रात के दिन 'बीवी को ब्लीडिंग हुई कि नहीं' देखते हैं? 8 साल की बच्ची का हायमन फटना नॉर्मल है? 20 प्लस की बीवी का नहीं? यह एक खबर प्लांट कर देने भर का मसला नहीं है। यह उस समाज की सड़न है जो नंगा होकर एक बच्ची से नृशंसता के समर्थन में खड़ा हो गया है। दक्षिणपंथी लेखिकाएं, श्रमिक आंदोलनों से जुड़े रहे कई बुजुर्ग, अपनी बेटी को बहुत प्यार करने का दावा करने वाले कई युवक, बात-बात पर संस्कारों और नैतिकता की दुहाई देने वाले कई अधेड़ इस कथित खबर को लेकर नाचने से लगे हैं।

जिसे खबर कहा जा रहा है, वह इतनी घिनौनी और बेशर्मी भरी है कि उस पर चर्चा भी शर्मनाक लगती है। कथित पत्रकार हाइमन के क्षतिग्रस्त होने का हवाला देता है और फिर किसी डॉक्टर का इंटरव्यू करने लगता है कि हाइमन किन-किन स्थितियों में क्षतिग्रस्त हो जाया करती है। वर्जिनिटी पर जोर देने वाले इस समाज में इस तरह की खबरें किशोर जीवन से ही हम तक पहुंचने लगती हैं कि घुड़सवारी, तैराकी, साइकिलिंग और दूसरे जोर वाले कामों से हाइमन खुद टूट जाया करती है। यहां पत्रकार बर्बरताओं के बाद मार दी गई उस 8 साल की बच्ची की हाइमन को लेकर इस तरह की बातें लिख रहा है।

बहुत बेशर्मी चाहिए, इस तरह की करतूतों के लिए और बेशर्मी की कोई कमी इस समाज में नहीं है। बस उसने यही नहीं लिखा कि इस नाम की कोई बच्ची थी ही नहीं। यही शख्स इससे पहले लिख चुका था कि कोशिशों के बावजूद सबूत नहीं मिटाए जा सके। कोई पूछ रहा है कि ऐसे लोग परिवार में स्त्रियों का सामना कैसे करते होंगे।

आप पूछिए कि बहुत सी स्त्रियां इस तरह की बातें किस तरह कर लेती हैं। हमारा समाज बलात्कार का समर्थक समाज है। इस ढकी-छिपी चीज को उभारकर बाहर लाया जा रहा है। यहां विरोधी और अपने से कमजोरों को सबक सिखाने के लिए बलात्कार जायज है, यह थ्योरी स्थापित की जा रही है। जो जश्न में शामिल हैं, यह आग उनके परिवारों तक भी पहुंचती है पर तब वे अकेले होते हैं।

कठुआ को जो लोग अपनी सुविधा के मुताबिक जस्टीफाई कर रहे हैं, उन्हें शायद दिखाई नहीं दे रहा हो कि इसी वक्त बच्चियों और महिलाओं से रेप की घटनाएं किस तरह बढ़ रही हैं। लेकिन, जो एक जगह नृशंसता के समर्थन में खड़ा हो, दूसरी जगहों पर भी विरोध नहीं कर सकता है। हां, दंगों के लिए जरूर इज्जत के सवाल प्लांट करने वालों के खेल में शामिल हो सकता है।

बहरहाल, कठुआ केस में दिल्ली की लैब की एफएसएल की रिपोर्ट, मेडिकल जांच और चार्जशीट में शामिल कुछ बातें-

1- पीड़िता के फ्रॉक और सलवार पर मिले खून के स्पष्ट धब्बे उसके डीएनए प्रोफाइल से मेल खाते हैं।

2- वजाइना के धब्बों में मिला खून भी पीड़िता का था।

3- पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट भी कहती है कि हाइमन को चोट पहुंची थी।

4- वजाइना के भीतर खून के धब्बों वाले डिस्चार्ज थे।

5- दिल्ली के ही मेडिकल एक्सपर्ट्स का निष्कर्ष है कि पीड़िता की हत्या से पहले उसके साथ एक से ज्यादा लोगों ने बलात्कार किया।

6- पीड़िता को भोजन के बिना रखा गया और उसे सिडेटिव दिया गया।

7- मौत की वजह गला घोंटा जाना था जिसकी वजह से हार्ट अटैक हुआ।

8- मंदिर के भीतर से मिले बाल की डीएनए प्रोफाइलिंग मृतक बच्ची की डीएनए प्रोफाइल से मैच करती है।

हत्या की जगह से मिले बाल की डीएनए प्रोफाइलिंग आरोपी के डीएनए से मेल खाती है। जो सबूत मिटाने के लिए बच्ची के कपड़े धो देने जैसी साजिशों के बावजूद सामने हैं। इनके होते हुए यह कहने का साहस एक निर्लज्ज और बलात्कार के हिमायती समाज में ही संभव है कि बच्ची के साथ दुष्कर्म नहीं हुआ।

राम माधव के कहने पर आसिफा गैंगरेप के समर्थन में खड़े हुए थे भाजपा सरकार के मंत्री?

यों तो नाम जम्मू—कश्मीर के प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा का आ रहा है कि उनके कहने पर मंत्री गए थे बलात्कारियों—हत्यारों के समर्थन वाली रैली में, लेकिन मंत्री के समर्थक कहते हैं असल खेल तो राम माधव ने खेला था, जो हर रोज गिरगिट की तरह रंग बदल रहे...

भाजपा हर बार फसादों को लेकर किए जाने वाले अनुमानों में फेल हो जाती है। या ये कह सकते हैं कि उसकी यही रणनीति रहती है। जब वह उत्तर प्रदेश के उन्नाव में नाबालिग लड़की के बलात्कार के आरोपी विधायक के पक्ष में 220 दिन खड़ी रही तो उसे अंदाजा नहीं था कि देशभर में सबसे दबंग छवि के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को यह घटना खड़ाऊ मुख्यमंत्री बना देगी, उन पर राजपूत—राजपूत खेलने का गहरा दाग लग जाएगा। योगी के समर्थक यह कहने लगेंगे कि दो गुजराती मिलकर योगी को अच्छे से निपटा रहे हैं।

पर हुआ यही। अगिया बैताल मुख्यमंत्री मुंह ताकते रह गए, मीडिया पूछती रह गयी कि क्या सबूत चाहिए गिरफ्तारी की, इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा मुकदमे के बाद विधायक क्यों नहीं हुआ गिरफ्तार, पर योगी कुछ न बोले। बात तभी बनी, कार्रवाई भी तभी हुई जब मोदी का संवदिया और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह लखनऊ पहुंचे।

यानी यूपीए के समय 2014 तब जो भाइपाई कांग्रेसी सरकारों के बारे में कहा करते थे, अब उससे भी बदतर हालत में पीएमओ के जरिए रिमोट से भाजपा सरकारें चल रही हैं और मुख्यमंत्री—उपमुख्यमंत्री खड़ाऊ की भूमिका में अपने राज्यों में सिमटे पड़े हैं।

इससे भी बदतर हालत जम्मू—कश्मीर में भाजपा की निकल कर सामने आई जब पता चला कि बलात्कारियों और हत्यारों के बचाव में रैली भाजपा के कहने पर हिंदू एकता मंच ने आयोजित की थी और पार्टी के कहने पर दो मंत्री मानवता और इंसानियत को शर्मसार कर देने वाली इस रैली के समर्थन में शामिल हुए थे।

अब जबकि दोनों आरोपी मंत्री चौधरी लाल सिंह और चंद्र प्रकाश गंगा ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है तब उनके समर्थक कहने लगे हैं कि ये सिर्फ शिकार हैं, जो जनदबाव में भाजपा ने किए हैं, लेकिन असल मास्टरमाइंड संघ के पूर्व पदाधिकारी और भाजपा महासचिव राम माधव हैं, जिनको बचाने की कोशिश में भाजपा ने दोनों मंत्रियों से इस्तीफा लिया है।

गौरतलब है कि राम माधव वह नेता हैं जिन्होंने जम्मू—कश्मीर में 25 सीटें दिलवाई हैं और पीडीपी जैसी भाजपा विरोधी पार्टी से सांठगांठ कराकर सरकार बनवाया है। यह भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक जीत थी। इसलिए राम माधव जम्मू—कश्मीर के राज्य प्रभारी तो हैं ही, इसके अलावा दिशा निर्देशक कहा जाता है और माना जाता है कि वहां का हर पदाधिकारी सीधे राम माधव की देखरेख में संचालित होता है।

इस्तीफा दे चुके मंत्री चौधरी लाल सिंह के समर्थक समझाते हैं, अखबारों के संदर्भ बताते हैं और राम माधव के बदले बयानों को एक—एक कर दिखाते हैं। वे बार—बार अपनी मजबूरियां कहते हैं कि हम अपने नाम से कुछ भी नहीं बोल सकते पर आप घटनाक्रम पर ध्यान दें तो साफ हो जाएगा कि पार्टी इसके पीछे थी।

लाल सिंह का समर्थक कहता है, %पूरी पार्टी में विरोध में बोलने का चलन नहीं रह गया है। जो बोलने वाले थे वे साइड लाइन हैं और चुप रह सकते हैं या मोदी और अमित शाह की जो भेड़ें बन सकते हैं, वे पार्टी में हैं।

आसिफा के बलात्कारियों के समर्थन में जम्मू रैली में पहुंचे भाजपा कोटे से जम्मू—कश्मीर सरकार के दोनों मंत्रियों चौधरी लाल सिंह और चंद्र प्रकाश गंगा के समर्थक सबसे पहले मोबाइल से नवभारत टाइम्स ऑनलाइन में छपी खबर दिखाते हैं, जिसमें राम माधव ने दोनों मंत्रियों के रैली में शामिल को लेकर बचाव किया है। ये खबर तमाम अखबारों में 14 अप्रैल को छपी है।

जम्मू पहुंचे राम माधव 14 अप्रैल को बलात्कार के समर्थन में रैली निकाले दोनों मंत्रियों को साथ लेकर मीडिया को संबोधित करते हैं। एएनआई ने इस संदर्भ में फोटो भी जारी की है, जिसमें मंत्री पद से इस्तीफा दे चुके चौधरी लाल सिंह और चंद्र प्रकाश गंगा, राम माधव के साथ दाहिने—बाएं बैठे हुए हैं। दिल्ली से भागकर राम माधव को जम्मू इसलिए जाना पड़ा क्योंकि पार्टी को लगा कि कहीं ये मंत्री मीडिया की पकड़ में न आ जाएं और राम माधव का नाम न ले दें।

इसी बचाव में राम माधव पहले दिन के प्रेस कांफ्रेंस में कहते हैं, भारतीय जनता पार्टी के ये दोनों नेता भीड़ को समझाने गए थे, लेकिन इस बात को गलत तरीके से समझा गया।यह बात उन्होंने 13 अप्रैल को दोनों मंत्रियों के इस्तीफे के बाद कही थी। मंत्रियों को इस्तीफा इसलिए देना पड़ा क्योंकि वे गैंगरेप के आरोपियों के पक्ष में हिंदू एकता मंच की रैली का समर्थन करने पहुंचे थे।

इस कड़ी को भी समझने की जरूरत है कि हिंदू एकता मंच, भाजपा के मंत्री, उनका बलात्कारियों—हत्यारों के पक्ष खड़ा होना, भाजपा में सक्रिय समर्थकों का बार काउंसिल का पुलिस के चार्जशीट दाखिल को रोकना, मुस्लिम लड़की का सामूहिक बलात्कार, मंदिर और कठुआ। इसके सिरे पकड़ते ही आपको समझ में आ जाएगा कि आखिर राम माधव को क्यों मंत्रियों के बचाव में उतरना पड़ा, क्यों भाजपा इस राज्य का राम माधव को स्टार मानती है।

जम्मू के सामाजिक राजनीतिक मसलों को जानने वाले पत्रकार देवेंद्र प्रताप कहते हैं, 'आसिफा जिस बकरेवाल समुदाय से वास्ता रखती थी वह पशुपालन करने वाली मुस्लिम गुर्जर घुमंतू जाति है। बकरेवाल अपने जानवरों को लेकर जाड़ों में नीचे आ जाते हैं और गर्मियों में ऊपर चले जाते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से वह जागरूक और शिक्षित हुए हैं। उनमें से बहुत से लोग स्थाई निवास भी बनाने लगे हैं। असल झगड़ा हिंदूवादी संगठनों और उनमें स्थाई निवास के कारण ही है।'

देवेंद्र प्रताप के मुताबिक, 'कठुआ में एक—दो दशक पहले तक मुस्लिम बहुत कम थी, लेकिन अब 22 फीसदी यहां बकरेवाल हैं। आरएसएस और हिंदू एकता मंच जैसे तमाम संगठन लगातार इस कोशिश में हैं कि इन्हें यहां से उजाड़ दिया जाए। लेकिन जबसे पीडीपी ने बकरेवालों को वन भूमि में बसने आदेश दिया है, अब वह स्थाई आवास बनाने लगे हैं, जबकि भाजपा और उसके समर्थक संगठन कठुआ को हिंदू स्थान ही बनाए रखना चाहते हैं। यह लड़ाई दोनों पार्टियों की ओर से लड़ी जा रही है। भाजपा के लिए बड़ी मुश्किल यह है कि उसे अगली विधानसभा में जीतने की कोई वजह नहीं मिल पा रही, क्योंकि उसने सरकार में रहते ऐसा कोई काम नहीं किया।'

देवेंद्र प्रताप की इन बातों का सिरा पकड़ा जाए तो बहुत साफ है कि भाजपा के दोनों मंत्री रैली में क्यों पहुंचे थे? क्यों दोनों मंत्रियों के समर्थक कह रहे हैं कि ये लोग राम माधव के निर्देश पर ही रैली में शामिल हुए थे, क्यों कह रहे हैं पार्टी को लंबे समय से ऐसे किसी मुद्दे की तलाश है जिसमें भाजपा राज्य में उभर कर आए और राज्यभर में गिरता ग्राफ ऊपर आए।

खैर! मामला बिगड़ते देख राम माधव सीधे जम्मू पहुंचे और पहले मंत्रियों को भरोसे में लिया, उनको मासूम और अनजान बताया, जिससे कि वे राम माधव का नाम न जुबान ला दें और बाद में जनदबाव बनते ही मंत्रियों से पलटी मार गए और कह दिया कि नहीं जी, उनका शामिल होना ठीक नहीं है। पार्टी उनके साथ नहीं है, इस्तीफे का स्वागत है। कोई लेकिन न रह जाए इसके लिए प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा का नाम भी मंत्रियों के हवाले से मीडिया में चलवा दिया कि उन्हीं के कहने पर वे बलात्कारियों—हत्यारों के समर्थक बने थे।

इस्तीफा दे चुके पूर्व मंत्री लाल सिंह के समर्थक कहते हैं, 'यह लाल सिंह नहीं बोल रहे कि जम्मू—कश्मीर भाजपा अध्यक्ष सत शर्मा के कहने पर बलात्कारियों के समर्थन में निकली रैली में गए थे, बल्कि यह पार्टी की तैयारी थी, जिसका डायग्राम राम माधव द्वारा दिया गया है। मंत्री नाम सत शर्मा का इसलिए ले रहे क्योंकि ऐसा ही करने को राम माधव ने कहा है, क्योंकि राम माधव का नाम आते ही पार्टी की छवि को बड़ा नुकसान होगा। और उससे बड़ा नुकसान संघ समर्थकों का होगा कि जो राम माधव वर्षों तक संघ के कार्यकर्ता और पदाधिकारी रहे, वे वोट के लिए इतना नीचे गिरकर रणनीति लागू कराते हैं। और रही बात प्रदेश अध्यक्ष की तो विधायक और कार्यकर्ता नहीं सुनते, मंत्री क्यों सुनने लगे, सीधे सबकी राम माधव सुनते हैं और राम माधव की सब सुनते हैं।'

हालांकि भाजपा समर्थक मीडिया को इस बात की सुगबुगाहट होते ही कि ऊंगली राम माधव की ओर उठने लगी है, राम माधव को बचाने में लग गयी। टाइम्स नाउ ने खुलासा किया कि दोनों मंत्री खुद की मर्जी से हिंदू एकता मंच की रैली में नहीं पहुंचे थे, बल्कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा के कहने पर वह वहां गए। बकरेवाल मुस्लिम समुदाय की नाबालिग 8 वर्षीय मासूका का सामूहिक बलात्कार और फिर हत्या से साफ है बलात्कारियों और हत्यारों के पक्ष में जो रैली हुई, जिसमें भाजपा के दो—दो मंत्री, कुछ विधायक और कार्यकर्ता शामिल थे, वह बगैर नरेंद्र मोदी के प्रिय अमित शाह और संघ के प्रिय भाजपा महासचिव राम माधव के नहीं हुई है। कम से कम राम माधव तो इस जघन्य सांप्रदायिक बंटवारे की राजनीति में सीधे शामिल रहे हैं, जो उन्हें गिरगिट जैसा लगातार रंग बदलना पड़ रहा है।

नरोदा पाटिया की खलनायिका को बरी कराने की पूरी साजिश रची गई

राना अयूब, (गुजरात फाइल्स की लेखिका)

गुजरात दंगों पर अहम खुलासे करती किताब लिखने वाली राना अय्यूब का कहना है कि माया कोडनानी के केस को लगातार कमजोर किया जा रहा था, जिससे उनके बरी होने का अंदाजा उन सभी लोगों को था, जो इसे फॉलो कर रहे थे।

गुजरात के नरोदा पाटिया दंगे मामले में पूरी जांच जितनी लचर थी और तथ्यों के साथ एसआईटी ने जो खिलवाड़ किया था, उसमें ये तो होना ही था। ऐसा लगता है कि देश में दोषियों के छूटने और बरी होने का दौर चल रहा है। ऐसा लगता है कि गुजरात दंगों में हजारों लोग जो मारे गए, उन्हें न्याय नहीं मिलेगा। मक्का मस्जिद, मालेगांव, समझौता ब्लास्ट सब की जांच को खत्म कर रही है सरकार- यह कहना है गुजरात नरसंहार पर सनसनीखोजी किताब लिखने वाली राना अय्यूब का। राना ने बताया, माया कोडनानी के पूरे मामले में तफ्तीश ही बहुत ढीले-ढाले ढंग से की गई। न तो फोन कॉल डिटेल सुरक्षित रखे गए, न ही की गवाहों की हिफाजत का ध्यान रखा गया, ऐसे में केस ही मजबूत नहीं बना। इस बात का अहसास हम तमाम लोगों को हो गया था, जो केस को फॉलो कर रहे थे। लगातार इसे कमजोर बनाया जा रहा था।राना अय्यूब ने अपने स्टिंग ऑपरेशन के दौरान माया कोडनानी से मैथली त्यागी का भेस बना कर मुलाकात की थी और बाद में अपनी किताब 'गुजरात फाइल्स: लीपापोती का परदाफाश', में उसे प्रकाशित किया था। इस किताब में माया कोडनानी से मुलाकात को अध्याय 10 में प्रकाशित किया गया है। इसमें साफ तौर पर माया कोडनानी यह बताने की कोशिश करती हैं कि वह उस दिन अमित शाह के साथ ही थीं। यानी एक तरह से वह यह स्थापित करने की कोशिश करती हैं कि अगर वह दंगों की दोषी मानी जाएंगी तो अमित शाह को भी बरी नहीं किया जा सकता। केस की सुनवाई के दौरान माया कोडनानी ने बीजेपी अध्यक्ष को बतौर गवाह पेश करने की अनुमति मांगी थी। वह भी इसी दबाव की रणनीति का हिस्सा था। पहले से ही सोहराबुद्दीन शेख और जस्टिस लोया की हत्या के मामले में विवादों में घिरे अमित शाह को सरकार अब और किसी झंझट में पड़ने देना चाहती, इसका साफ सबूत नरोदा पाटिया केस के फैसले में दिखाई देता है।पेश है, राना अय्यूब की किताब के अध्याय 10 के अंश। राना अय्यूब ने मैथली त्यागी बन कर छिपे हुए कैमरे से इस सारी बातचीत की रिकॉर्डिंग की थी।

गुजरात फाइल्स-लीपापोती का पर्दाफाश

माया कोडनानी: सारे गुजरात में दंगे हुए थे, लेकिन वे नरोदा की विधायक यानी मेरे पीछे पड़े थे।

प्र) आपको बलि का बकरा बना दिया?

उ) हां।

प्र) तो मोदी से पूछताछ में हुआ क्या?

उ) एसआईटी की पूछताछ में वह भी गए थे, लेकिन उन्हें छोड़ दिया गया।

प्र) लेकिन जिस पैमाने पर आपको गिरफ्तार किया गया, उस तरह से तो उन्हें भी करना चाहिए था?

उ) हाहा (सहमति में सिर हिलाते हुए)

प्र) मैं उनसे कल मिल रही हूं, आपके मोदी से?

उ) जब तुम मोदी से मिलो तो उनसे पूछना, वह इतने विवादित शख्स क्यों हैं?

प्र) वाकई?

उ) वह हर बात को अपने पक्ष में मोड़ लेते हैं।

प्र) तो क्या ये लोग आपसे मिलने जेल में आए थे?

उ) नहीं, कोई भी नहीं आया।

प्र) तो, आप कभी भी सलाखों के पीछे जा सकती हैं?

उ) हां कभी भी, किसी भी दिन, एक बार फैसला आते ही।

प्र) मुझे मोदी से क्या पूछना चाहिए, अब वह (मेरे सवालों को) घुमा-फिरा देंगे?

उ) तुम जरा सवाल को घूमा-फिराकर पूछना। तारीफ करना और फिर सवाल करना

प्र) आपके बारे में?

उ) उससे किसी और तरह से पूछना, यह पूछना कि उनके कुछ मंत्री क्यों शामिल हैं। पीसी पांडे से पूछो, उसे हर चीज पता है, वो सच जानता है। उससे पूछना, वह अहमदाबाद का पुलिस कमिश्नर था।

प्र) तो वो सच क्यों नहीं बोलते हैं?

उ मुझे नहीं पता।

प्र) अब मैं समझी उनका चेहरा क्यों उतरा था (कोडनानी के बारे में पूछने पर)?

उ) वह अब मेरे बारे में बात क्यों करेगा।

प्र) और मोदी?

उ) उनकी तारीफ करना, उनके काम करने के तरीकों की तारीफ करना। फिर वह बात करेंगे। पता है वह क्या जवाब देंगे, वही रटे-रटाए जवाब, 'मुझे विवेकानंद से प्यार है, मुझे सरदार वल्लभ भाई पटेल से प्यार है।' मेरे बारे में पूछोगी तो वह कहेंगे, 'अच्छा हम क्या करें, एसआईटी थी, फोन कॉल रिकार्ड्स थे।' या वो और छोटा और प्यारा जवाब देंगे, 'यह मामला अभी कोर्ट में विचाराधीन है।'

प्र) तो ये सारी बातें तो उन पर भी लागू होती हैं?

उ) हाहा...ये उनसे पूछना।